Multidisciplinary Journal of Shri Trilochan Upreti Smriti Shodh Sansthan DOI :
Vol.1 (2026)

भारतीय संस्कृति, परम्परायें एवं वैज्ञानिकता

डॉ. अदिति सिन्धू
असिस्टेंट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग
एस.बी.डी. पी.जी. कॉलेज, धामपुर, बिजनौर (उ.प्र.)
सदस्य- प्रज्ञा प्रवाह, मंडल संयोजक-प्रज्ञा प्रवाह भारतीय प्रज्ञान परिषद, मेरठ प्रांत, उ.प्र.

डॉ. भारती चौहान
विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग
आर.एस.एम. पी.जी. कॉलेज, धामपुर, बिजनौर, (उ.प्र.)
मुरादाबाद मंडल -संयोजक, प्रज्ञा प्रवाह, भारतीय प्रज्ञान परिषद, मेरठ प्रांत, उ.प्र.

शोध सार :- भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति की परंपराएं हमें हमारी जड़ों से जोड़ती हैं और हमे एक विशिष्ट पहचान देती है। ये परंपराएं हमें नैतिकता, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी की शिक्षा देती है। इसका विकास सहस्राब्दियों में हुआ है और इसमें जीवन के हर पहलू को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने का आग्रह रहा है। भारतीय संस्कृति केवल धार्मिक और आध्यात्मिक नहीं रही, बल्कि इसमें गहन वैज्ञानिक चिंतन भी समाहित रहा है। आज के वैज्ञानिक युग में भी भारतीय संस्कृति का वैज्ञानिक पक्ष प्रेरणा का स्रोत है। योग, आयुर्वेद, ध्यान जैसी भारतीय पद्धतियॉ आज वैश्विक स्तर पर स्वीकार की जा रही है। भारतीय दृष्टिकोण सिखाता है कि आस्था और तर्क साथ-साथ चल सकते है।

मुख्य शब्द :- भारतीय संस्कृति, वैज्ञानिकता, परम्परायें, अध्यात्म, पर्यावरण।

भारत में प्राचीन समय से ही ज्ञान की खोज और प्रयोग पर बल दिया जाता रहा हैं। वैदिक ऋषियों ने केवल धर्म और दर्शन की नहीं, बल्कि गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, रसायन, भौतिकी, कृषि, और वास्तु जैसे विषयों पर भी अनुसंधान किया। भारतीय संस्कृति ने यह स्वीकारा कि प्रकृति के प्रत्येक रहस्य को जानने के लिए तर्क, निरीक्षण ओर प्रयोग आवश्यक है। भारतीय रीति-रिवाजों, पर्व-त्योहारों और जीवन शैली में भी वैज्ञानिक तर्क छुपे हुए है। प्राचीन मान्यताओं तथा ऐतिहासिक, पौराणिक, अध्यात्मिक मान्यताओं पर नजर डाले तो पता लगता है कि हमारी संस्कृति में कहीं न कहीं आज भी इसकी पैठ ज्यों की त्यों हुई है। हम देखते हैं कि प्राचीन काल से प्रकृति की पूजा, जंगल एवं वृक्ष की पूजा आदि हमारे संस्कृति के अंग बन गए हैं जो आज भी उसी रूप में पूरे देश में व्याप्त है। चाहे वह वट वृक्ष, पीपल, तुलसी का पौधा या फिर छठ पूजा जैसे अनुष्ठान में भगवान सूर्य की पूजा की बात हो। हम यह भी देखते है कि बैसाखी, मकर संक्रान्ति, पोंगल, ओणम, सरहुल जैसे तमाम पारंपरिक पूजा पाठ आज भी हमारे समाज तथा संस्कृति की पहचान बने हुए हैं। देव पूजा, वृक्ष पूजा, प्रकृति पूजा, पशु पूजा (नदी, तालाब, झील, आकाश, गाय, पूजा अथवा अन्य आदि) पक्षियों के प्रति संवेदना, पर्यावरण के प्रति संवेदनशील तथा पशुओं के प्रति सोच हमारी संस्कृति की सजीवता और सहजता को दर्शाता है। यह सब हमारी संस्कृति की रीढ़ है, जोकि हजारों वर्ष से ये मान्यताएं परंपराओं के आधार पर आज भी जारी है।

भारतीय संस्कृति वर्तमान एवं भविष्य :-

भौगोलिक दृष्टि से भारत विविधताओं का देश है, फिर भी सांस्कृतिक रूप से एक इकाई के रूप में इसका अस्तित्व प्राचीनकाल से बना हुआ है, इस विशाल देश में उत्तर का पर्वतीय भू-भाग, जिसकी सीमा पूर्व में ब्रह्मपुत्र और पश्चिम में सिन्धु नदियों तक विस्तृत है।

इसके साथ ही गंगा, यमुना, सतलज की उपजाऊ कृषि भूमि, विन्ध्य और दक्षिण का वनों से आच्छादित पठारी भू-भाग, पश्चिम में थार का रेगिस्तान, दक्षिण का तटीय प्रदेश तथा पूर्व में असम और मेघालय का अतिवृश्टि का सुम्य क्षेत्र सम्मिलित है। इस भौगोलिक विभिन्नता के अतिरिक्त इस देश में आर्थिक और सामाजिक मित्रता भी पर्याप्त रूप से विद्यमान है। वस्तुतः इन भिन्नताओं के कारण ही भारत में अनेक सांस्कृतिक उपधाराएं विकसित होकर पल्लवित और पुष्टिपत हुई है, जो आज भी विद्यमान हैं तथा भविष्य में भी जारी रहेंगी। हिमालय सम्पूर्ण देश के गौरव का प्रतीक रहा है, तो गंगा यमुना और नर्मदा जैसी नदियों की स्तुति यहाँ के लोग प्रचीन काल से करते आ रहे है। राम, कृष्ण और शिव की आराधना यहाँ सदियों से की जाती रही है। भारत की सभी भाषाओं में इन देवताओं पर आधारित साहित्य का सृजन हुआ है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक सम्पूर्ण भारत में जन्म, विवाह और मृत्यु के संस्कार एक समान प्रचलित है। विभिन्न रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार और तीज-त्यौहारों में भी विविधता में समानता है।

भारत में प्राकृतिक देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना का क्रम शताब्दियों से चला आ रहा है। देवताओं की मान्यता, हवन और पूजा-पाठ की पद्धतियों की निरन्तरता भी आज तक अप्रभावित रही है। वेदों और वैदिक धर्म में करोड़ों भारतीयों की आस्था और विश्वास आज भी उतना ही है, जितना हजारों वर्षो पूर्व था। गीता और उपनिषदों के सन्देश हजारों सालों से हमारी प्रेरणा और कर्म का आधार रहे है। किंचित परिवर्तनों के बावजूद भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्वों, जीवन मूल्यों और वचन पद्धति में एक ऐसी निरन्तरता रही है कि आज भी करोड़ों भारतीय स्वयं को मूल्यों एवं प्रणाली से जुड़ा हुआ महसूस करते है और इससे सतत प्रेरणा प्राप्त करते है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिन्दू धर्म विश्व का सबसे प्राचीन धर्म है। हिन्दू धर्म के इतिहास पर दृष्टि डालें तो सर्वसम्मति से और विभिन्न साक्ष्यों और प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि हिन्दू धर्म का आरम्भ सिन्धु घाटी की सभ्यता से जुड़ा हुआ है, सिन्धु घाटी की सभ्यता में मिली पशुपति नाथ की मूर्ति, जर्मनी में 1939 में मिली नरसिंह की मूर्ति इस बात के ठोस प्रमाण हैं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि हिन्दू धर्म का जन्म वेदों से ही हुआ है इसलिए इसे वैदिक धर्म भी कहा जाता है। वेदों की संरचना के साथ ही मंत्रों का जन्म हुआ और हिन्दू धर्म के दार्शनिक और वैज्ञानिक पक्ष का विकास हुआ। इसी समय योग, सांख्यिकी, वेदांत और उसके बाद पुराणों की रचना हुई जिनमें धर्म, ज्ञान, विज्ञान और इतिहास का वर्णन मिलता है।

वैदिक परम्पराए एवं विज्ञान :-

वैदिक प्राचीन भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो वैज्ञानिकता और स्थायित्व पर जोर देती हैं इन परम्पराओं की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है और हमें प्रेरित करती है। वैदिक परम्पराओं में प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखने के कई तरीके बताए गए हैं। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वनस्पतियों का वर्णन विस्तार से किया गया है जो उनकी महत्ता और

उपयोगिता को दर्शाता है।

भारतीय संस्कृति में रीति-रिवाजों और परंपराओं का वैज्ञानिक महत्व है, जैसे हमारे बुजुर्ग प्रातः उठकर अपने दोनों हाथों की हथेलियों को देखते हैं और उनमें ईश्वर का दर्शन करते हैं, धरती पर पैर रखने से पहले धरती माँ को प्रणाम करते हैं क्योंकि जो धरती माँ धन्य-धान्य से परिपूर्ण करती है, हमारा पालन-पोषण करती है, उसी पर हम पैर रखते हैं, इसलिए धरती पर पैर रखने से पहले उसे प्रणाम कर उससे माफी मांगते हैं। यहां हर धर्म का अपना अलग रीति-रिवाज है, उदाहरण के तौर पर हिन्दू परिवार में अपने से बड़ों को नमस्ते कह कर अभिवादन किया जाता है, उसी तरह मुस्लिम आदाब कहकर अभिवादन करते हैं, सूर्य ग्रहण के समय घर से बाहर न निकलने की परंपरा के पीछे वैज्ञानिक तथ्य छिपा हुआ है। दरअसल सूर्यग्रहण के समय सूर्य से बहुत ही हानिकारक किरणें निकलती हैं जो हमें नुकसान पहुंचाती हैं, इसलिए कहा जाता है कि हमें सूर्योदय से पहले उठना चाहिए क्योंकि इस समय सूरज की किरणों में भरपूर विटामिन 'डी' होता है और ब्रह्म मुहूर्त में उठने से हम दिनों-दिन तरोताजा रहते हैं और आलस हमारे पास भी नहीं भटकता। सूर्य नमस्कार की परंपरा हिन्दू धर्म में प्राचीन काल से चली आ रही है, इस प्रथा में रोज सुबह जल्दी उठकर नहा-धोकर सूर्य देव को जल दिया जाता है और फिर हाथ जोड़कर उन्हें नमस्कार किया जाता है, सूर्य नमस्कार करते वक्त जब हम जल चढ़ाते हैं तो सूर्य की किरणें पानी से होकर सीधे हमारी आँखों पर पड़ती हैं जो हमारी आँखों के लिए अत्यंत लाभकारी माना जाता है, इस परंपरा से हमारे शरीर को कितना लाभ होता है यह तो इस बात से जाहिर हो जाता है कि अब इस कार्य को एक अहम योगासन माना जाता है। हिन्दू धर्म, विज्ञान आधारित धर्म कहा जाता हैं प्राचीन काल में शिक्षा का प्रचार प्रसार न होने के कारण हिन्दू धर्म में ज्ञान विज्ञान की शिक्षा धर्म से जोड़कर, परम्पराओं और मान्यताओं में बांधने का प्रयास किया गया। कहते है जो वैज्ञानिक नियमों के अनुसार अपना विकास करता है, वही शाश्वत होता हैं इसी कारण हिन्दू धर्म को सनातन धर्म भी कहा जाता है। इस धर्म की नींव भी वैज्ञानिकता पर ही आधारित है। इसका प्रमाण सबसे पहले मिलता है, प्राचीन काल के कार्यानुसार किए गए वर्ण विभाजन से, जहाँ व्यक्ति के कार्य के अनुसार उसके वर्ण को विभाजित किया गया था। सभी वर्णों में आपसी प्रेम और समन्वय था। इसके अलावा हमारे पूर्वजों ने अनेक धार्मिक परपंराएं और मान्यताएं निर्धारित की हैं। जब उन्हें वैज्ञानिक कसौटी पर कसा जाता है तो वह खरी उतरती है। इससे यह पता चलता है कि हिन्दू धर्म पूरी तरह से वैज्ञानिक है।

गायंत्री मंत्र एक प्राचीन और पवित्र मंत्र है जो मानसिक शान्ति, आध्यामिक विकास, चेतना का विकास करता है। गायत्री मंत्र की ध्वनि तरंगें हमारे और एकाग्र करने में मदद करती है। जिससे तनाव और चिन्ता कम होती है। इसी तरह पूजा की घंटी और शंखनाद पूजा के दौरान हमें मानसिक शान्ति, एकाग्रता और वातावरण के शुद्धिकरण में मदद करते हैं। ये ध्वनि तरंगे रक्तचाप और हृदय गति को नियंत्रित करने में मदद करती है तथा वातावरण में मौजूद नकारात्मक ऊर्जा को दूर करती है। उपवास विभिन्न संस्कृतियों में एक महत्वपूर्ण धार्मिक प्रथा है जो शरीर की शान्ति, प्रतिरक्षा प्रणाली के साथ-साथ आध्यात्मिक शान्ति की भावना भी प्रदान करता है। शिखा रखना भी एक पारंपरिक हिन्दू परंपरा है।

जिसमें सिर के पीछे के हिस्से में बालों को रखा जाता है जो मास्तिष्क की सुरक्षा, न्यूरोलॉजिकल लाभ और आध्यात्मिक लाभ प्रदान करती है। शिखा रखने से व्यक्ति में आत्म-ज्ञान, आत्म-विकास और आध्यात्मिक शान्ति की भावना प्रदान होती है।

वैदिक ऋषि ब्रह्मांड के गहरे पर्यवेक्षक भी थे। वे चन्द्रमा की गति सूर्य की गति और मार्ग, ग्रहणों और संक्रातियों का विकास और लूनी-सौर पंचांगों के विभिन्न तरीकों से अवलोकन तथा समायोजन से भली-भांति परिचित थे और भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने 27 या 28 नक्षत्रों या तारकों (तारों के समूहों) की एक स्थलीय सन्दर्भ प्रणाली विकसित की जो, चन्द्रमा और सूर्य के मार्ग के पास या उस पर स्थित होते थे। यह प्रणाली चन्द्रमा और सूर्य की गति का पालन करने के लिए थी। वेदों की छह शाखाओं मे से एक और सबसे प्राचीन भारतीय खगोलीय ग्रन्थ वेदांग ज्योतिष के नाम से जाना जाता है। जिसने पंचवर्षीय लूनी-सौर चक्र की अवधारणा को व्यवस्थित किया था। जिसमें उचित और नियमित अंतरालों पर अधिलक्षण के साथ समय समायोजन किए जाते थे। बाद में भारतीय खगोलविदों ने 43,20,000 वर्षों की एक बड़ी चक्रीय अवधि को अपनाया। इस महाचक्र की शुरुआत में, ऐसा माना जाता था कि सभी ग्रह एक दूसरे के साथ संयोजन में होते है और पृथ्वी के साथ उनकी क्रांतियों की पूर्ण संख्याओं के अनुसार वे पुनः संयोजन में आ जायेंगे। कोपरनिकस (1473-1543) के समय से एक हजार वर्ष पहले, आर्यभट (लगभग 476 ईस्वी) ने भारत में खगोलशास्त्र और गणित में अद्‌भुत योगदान दिए। उनके योगदानों में शामिल है: पृथ्वी और चंद्रमा के व्यास का निर्धारण, पृथ्वी का अपने अक्ष पर घूमने का प्रस्ताव जिससे स्थिर तारों की दैनिक गति की व्याख्या की जा सके, द्‌विघात समीकरण का हल, त्रिकोणमितीय फलनों को परिभाषित करना, शून्य के महत्व को रेखांकित करना, और (पाई) का मान चौथे दशमलव स्थान तक निर्धारित करना। ईसाई युग के पहले और बाद के तीन शताब्दियों के दौरान, खगोलशास्त्र गणित पर आधारित हो गया। एक नई श्रेणी के खगोलशास्त्र ग्रन्थ सामने आए जिन्हें सिद्धान्त (अंतिम समाधान) कहा गया, जिनमें अब परिचित बारह राशियों ने नक्षत्र प्रणाली का स्थान ले लिया।

इस ब्रह्मांड में लगभग हर चीज सात मूलभूत रंगों से बनी है। इंद्रधनुष में सात रंग होते हैं बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी और लाल। हिंदू मान्यताओं के अनुसार, प्रत्येक ग्रह कुछ विशिष्ट ब्रह्मांडीय किरणें उत्सर्जित करता है, जिनमें कुछ लाभकारी होती हैं और कुछ हानिकारक। प्राचीन भारतीय ऋषियों ने यह खोज की थी कि इन ग्रहों की हानिकारक किरणों का प्रभाव कैसे कम किया जा सकता है। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि औषधीय उपायों के रूप में रत्न, जड़ी-बूटियों या धातुओं की तुलना में कहीं अधिक प्रभावशाली हैं। रत्न ब्रह्मांडीय फिल्टर की तरह काम करते हैं, लाभकारी किरणों को बढ़ाते हैं और हानिकारक किरणों को रोकते हैं। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, रत्न सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव डालते हैं। यह देखा गया कि प्रत्येक ग्रह का एक विशेष रत्न से संबंध होता है और प्रत्येक रत्न में उस विशेष ग्रह द्वारा उत्सर्जित विकिरण को अवशोषित करने की आंतरिक शक्ति होती है। अतः अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए, ज्योतिषीय रूप से पहचाने गए ग्रहों से संबंधित रत्नों को पहनना आवश्यक माना गया है, ताकि सही

ऊर्जा को ग्रहण किया जा सके।

सभी विज्ञानों में, चिकित्सा को सबसे उन्नत माना गया, विशेषकर इस तथ्य के कारण कि अथर्ववेद (लगभग 1500ई.पू.) जो भारत के चार प्राचीन धर्मग्रन्थों में से एक है, उसमें औषधीय गुणों वाली जड़ी-बूटियॉ का वर्णन है। कई प्राचीन ग्रन्थों में शरीर विज्ञान के आधार पर ऐसे कारण बताए गए हैं जो अच्छे या बुरे स्वास्थ्य को निर्धारित करते है। पारम्परिक भारतीय चिकित्सा प्रणाली-आयुर्वेद-दीर्घायु पर केन्द्रित थी और इसके लिए विभिन्न उपचार बताए गए थे। सोना, चांदी, पारा, लहसुन और शहद को विशेष उपचारात्मक गुणों के रूप में वर्णित किया गया है, और ये भारत औषधि-संहिता की विशाल निधि का हिस्सा है।

वैदिकता एवं पर्यावरण :-

हमारी वैदिक प्रार्थना, शान्ति पाठ एवं स्वस्ति वाचन में औषधि, वनस्पति, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश सभी की शान्ति हेतु विनती की जाती है यह सब पर्यावरण शुद्धि से ही संभव हैं, इसी शुद्धि हेतु हमारे पूर्वजों में दैनिक परम्परा डाली। विशिष्ट अवसरों पर यज्ञों के विशाल स्वरूप का आयोजन हमारी संस्कृति की पर्यावरण संरक्षण की वह दीर्घकालीन परम्परा है। जिसका प्रभाव आज भी जन-जीवन पर है। श्रीमद्भागवत में एक कथा है कि नागाराज वासुकि के रहने से वृंदावन में यमुना का जल विषाक्त हो गया था जिसे पी-पीकर ग्वाल-बाल तथा बछड़े मर जाया करते थे। इसलिए कृष्ण ने नागराज को दंड दिया था और यह निर्देश दिया था कि वह अब अपना जहर यमुना में विसर्जित नहीं करेगा, किन्तु आज कोई कृष्ण नहीं है। यमुना का जल किसी नागराज द्वारा नहीं, बल्कि प्रदूषण से विषाक्त किया जा रहा है, जो पर्यावरण के महत्व को दर्शाता है। कुछ परंपराएं तो शुद्ध रूप से वैज्ञानिक आधार वाली हैं। जैसे कि हमारे देश में ज्ञान की देवी देवताओं को व्यक्ति की दिनचर्या से जोड़ा गया है और चूंकि भगवान, देवी और देवताओं की हमारे देश में सदियों से पूजा होती आ रही है और हमारे पूर्वज हमें भी शिक्षा देना चाहते थे अतः उन्होंने सभी देवी देवताओं के मूर्त रूप के सापेक्ष उनके वाहनों को इस प्रकार से चुना कि पृथ्वी पर उन्हें नुकसान ना पहुंचाया जाये और उनके सांकेतिक प्रभावों का ज्ञान भी हमें इसी प्रकार पहुंचाया जाए।

हमारे देश में धर्म पर विश्वास रखने वालों की संख्या बहुतायत में है और जो इसे नही मानते है, वो इन रीतियों का सम्मान तो करते ही है। सदियों पहले जब फाउंटेन पेन का आविष्कार नहीं हुआ था, तब हमारे पूर्वज मयूर पंख में स्याही को सोख कर पेन की भांति लिखा करते थे। पढ़ाई लिखाई में उस कलम का विशेष स्थान था और शिक्षा की देवी सरस्वती का वाहन मोर बनाया गया ताकि मोर के भविष्य को सुरक्षित रखा जा सके। उल्लू को धन की देवी लक्ष्मी का वाहन बनाया गया, उल्लू रात को उड़ता है, उसकी आँखें रात को जागती हैं। मसलन पूर्वज हमें सूचित करना चाहते थे कि धन की सुरक्षा रात में अवश्य करें अन्यथा वह चोरी हो सकता है। ऐसी ही ना जाने कितनी ही महत्वपूर्ण बातें हैं जिन्हें अब भी समझना शेष है। गाय को मां के रूप में मानना भी एक महत्वपूर्ण परम्परा है क्योंकि यह कह कर हमारे पूर्वजों ने हमें जानकारी दी है कि गाय के दूध, गोबर एवं मूत्र औषधि का ही रूप है और गाय के दूध में इंसान के बच्चे की मां के दूध के समान गुण होते हैं। इसलिए गाय को माता की संज्ञा दी गई है और भी यह परंपरा कायम है। हिन्दू धर्म को इस संसार का सबसे

प्राचीन और वैज्ञानिक धर्म माना जाता है और सिर्फ माना ही नहीं जाता बल्कि इसके प्राचीनतम होने के अनेक प्रमाण भी उपलब्ध है।

निष्कर्ष :-

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता इस तथ्य का पृष्ठ प्रमाण है कि भारत में सर्व धर्म का समभाव को सदैव आदर की दृष्टि से देखा गया है तथा समस्त धर्मो का एकमात्र शाश्वत सत्य है-'जीओ और जीने दो' जीओ और जीने दो का सम्बन्ध न केवल मानव समुदाय तक ही सीमित है किन्तु इसका चर-अचर जीव, जड़, प्रकृति व पर्यावरण से भी गहरा सम्बन्ध है। सभी धर्मो में सदा ही मानव मात्र के कल्याण की परिकल्पना निहित है, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को स्वीकार है तथा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरमया' की कल्पना से संजोया है।

समस्त विज्ञान को वैदिक मंत्रों में समाविष्ट करने वाले ऋषियों ने विनाश के भय से वैज्ञानिक प्रयोगों की अपेक्षा आध्यात्मिक विषयों का अधिक मनन किया है। प्रकृति के विरूद्ध तत्वज्ञों ने कभी कोई काम नहीं किया और जिन्होंने किया उन्हें दुष्परिणाम ही भुगतान पड़ा इसके कई उदाहरण हमें वैदिक ग्रन्थों से प्राप्त होते है वैदिक साहित्य के अनुसार प्रत्येक मनुष्य यह अनुभव करे कि उसकी शारीरिक व मानसिक संरचना में प्रकृति के गुण समाए हुआ है। अतः प्रकृति की रक्षा में ही उसकी सुरक्षा निहित है। हमारी परंपराएं हमे हमारे पूर्वजों की विरासत से जोड़ती है और हमें एक विशिष्ट पहचान देती है। भारतीय परंपराओं का संरक्षण करना हमारी जिम्मेदारी है। हमें अपनी भावी पीढ़ियों को अपनी परंपराओं के विषय में शमिल करना चाहिए और अपनी संस्कृति की महत्ता बतानी चाहिए। अगर हम अपनी परम्पराओं का सम्मान करेगे और उन्हे आगे बढ़ाएंगे, तो हम अपनी संस्कृति को संरक्षित कर पाएंगे और अपनी आने वाली पीढ़ियों को एक समृ) विरासत दे पाएंगे। भारतीय संस्कृति और विज्ञान दोनों ही एक दूसरे के पूरक है। भारतीय संस्कृति केवल परम्पराओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह वैज्ञानिक सोच और विवेकशील जीवन पद्धति का अद्भुत समन्वय है। हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत के वैज्ञानिक पक्ष को पहचानकर और आगे बढ़ाकर विश्व को एक संतुलित, तर्कपूर्ण और आत्मिक जीवन का मार्ग दिखाना चाहिए।

सन्दर्भ सूची :-

1. डा0 जितेन्द्र कुमार वर्मा व डा0 आलोक कुमार पाण्डेय, ''भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृति : परम्परा और धारोहर का गौरव,'* Divyayatan, A Jouranal of Lakulish Yoga University E-ISSN : 3048-4928.
2. कमलेश कुमार जोशी, ''पर्यावरण संरक्षण में वैदिक संस्कृति और धर्म का योगदान,** International Journal odf Art & Education Research. May-June 2023/Volume-12/Issuue-3 ISSN : 2278-9677
3. Tejinder Singh and Ranandeep Kour, Scientific and Technological Developments in India Heritage: A Review. Procedings of National Seminar on Indian Heritage: Presprectives and Prospects, January 10-11-2014.
4. A.V. Balasubramanian, "Traditional and modern science and technologies in India: trading new paradigms for old" in Proceedings of the Bridging Scales and Episte-mologies: Linking Lock Knowledge with Global Science in Multi-Science Assessments,March 2004, oo.1 -10.
5. M.G. Prashad, 'Science, TYechnology and Sanskrit in Ancient India," Stevents Inst. Of Technology.
6. Dorairajan Balasubramanian and N. Appaji Rao, eds., "the India human heritage," University Press, 1998.